॥ श्रीसुब्रह्मण्यस्तोत्रम् सार्थ ॥

नील कण्ठ वाहनम् द्विषद् भुजम् किरीटिनं
लोल रत्न कुण्डल प्रभा अभिराम षण्मुखम् ।
शूल शक्ति दण्ड कुक्कुट अक्ष मालिका धरं
बालम् ईश्वरम् कुमारशैल वासिनम् भजे ॥ १

वल्लि देवयानिका समुल्लसंतम् ईश्वरं
मल्लिकादि दिव्य पुष्प मालिका विराजितम् ।
झल्लरी निनाद शङ्ख वादन प्रियम् सदा
पल्लवारुणम् कुमारशैल वासिनम् भजे ॥ २

षडाननम् कुंकुम रक्त वर्णं
महा मतिम् दिव्य मयूर वाहनम् ।
रुद्रस्य सूनुम् सुर सैन्य नाथं
गुहम् सदा शरणमहम् भजे ॥ ३

मयूराधि रूढम् महा वाक्य गूढं
मनोहारी देहम् महा च्चित्त गेहम् ।
मही देव देवम् महा वेद भावं
महादेव बालम् भजे लोकपालम् ॥ ४

इति श्री सुब्रह्मण्य स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥